

Hindi : By-Mr.Sudeep Sir

प्राच्यवाद (Orientalism)

यह शब्द पश्चिमी अकादमियों और विश्वविद्यालयों से आया है। यूरोप ने एशिया और अफ्रीका महाद्वीपों को अपना गुलाम बनाया। उसने इन देशों पर शासन किया और अपने आर्थिक लाभ के लिए यहाँ के संसाधनों का उपयोग किया। इस आर्थिक लाभ में इन देशों के कच्चे माल और वस्तुओं की बिक्री भी शामिल थी और साथ ही इन देशों के उपनिवेशों के कच्चे संसाधनों का उपयोग भी शामिल था। भारत, अफ्रीका, चीन, इन देशों पर यूरोपीय देशों का आधिपत्य था, विशेषकर ब्रिटेन का। एक समय ब्रिटेन के बारे में कहा जाता था कि यह एक ऐसा देश है जिसके साम्राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता। अर्थात् उनका जो अधिकार क्षेत्र था, वह इतना ज़्यादा विस्तृत था।

- अब 18वीं और 19वीं शताब्दी में एक विशेष प्रकार का अध्ययन शुरू हुआ जो कि यूरोप सेंट्रिक था अर्थात् यूरोप केन्द्रित। इसका अर्थ होता है पश्चिम के विद्वानों ने जब इन उपनिवेशों की संस्कृति का, इनके साहित्य का, इनके इतिहास,

कलाओं और दर्शन का अध्ययन किया तो उसके बाद जो उन्होंने निष्कर्ष निकाले, वो निष्कर्ष कुछ खास उद्देश्यों के तहत निर्मित किए गए थे।

- जब ब्रिटेन से पूछा जा रहा था कि आप क्या कर रहे हैं उत्तरी अफ्रीका में या भारत जैसे देशों में, तो उनका जवाब होता था कि हम तो इन देशों को सभ्य बना रहे हैं। यह एक तरह का मिशलेनरी कार्य है। तो ऐसे में यह ज़रूरी था कि इंग्लैंड के विद्वानों द्वारा यह कहा जाए कि यह देश पिछड़े हुए हैं, असभ्य हैं, असंस्कृत हैं। इन देशों के स्कॉलर्स जो थे, उन्होंने यहाँ की संस्कृतियों को, इतिहास को एक असभ्य, असंस्कृत और बर्बर जातियों के देश की जातियों के रूप में दिखाया है। वे भारत की बात करते हैं कि , इस देश में तरह-तरह के अंधविश्वास फैले हुए हैं।
- उस समय जो यूरोपियन स्कॉलर थे, वो एक खास तरह के एजेंडा के तहत काम कर रहे थे और ये सब यूरोपियन स्कॉलर जो थे, वे उन देशों के विश्वविद्यालयों में बैठकर काम कर रहे थे। यहाँ तक कि कई सारे स्कॉलर ऐसे भी थे जो कभी इन देशों में गए ही नहीं।

- प्राच्यवाद 18वीं और 19वीं शताब्दी का पश्चिमी कलांत का शासन था।
- यह एक ऐसी विचारधारा है जहाँ पर एक देश अपने आप को श्रेष्ठ साबित करते हैं। पूरब के देश यानी ओरिएंट, इन्हें कहा जाता है और इस ओरिएंट(Orient) का अध्ययन करने वाले लोग ऑक्सीडेंट(Oxidents) कहलाते हैं। इसी ओरिएंट से एक शब्द बना है ओरिएंटलिज्म(Orientalism)जिसे प्राच्यवाद हिंदी में कहते हैं।
- East v/s west इस तरह की जो मानसिकता है, वह चीजों को एक दूसरे के विरोध में या एक दूसरे के खिलाफ रखकर देखना यूरोप में शुरू होती है।
- हम सब अपनी दिनचर्या में ऐसी बहुत सी वस्तुओं का प्रयोग करते हैं जो यूरो सेंट्रिक(Euro-centric) हैं।जैसे कि भूगोल में ग्रीनविच जो कि इंग्लैंड में है। जब पूरी दुनिया का समय निर्धारित किया जा रहा था तब यह तय किया गया कि ग्रीनविच ही वह जगह है जहाँ से दुनिया का समय निर्धारित किया जाएगा।

- एशिया की, अफ्रीका की ऐसी छवियाँ बनाई गईं उन देशों में जो एक कल्पना जनित हैं, तार्किक नहीं। रुडयार्ड किपलिंग एक बायस्ड राइटर हैं, अर्थात एक पक्षपातपूर्ण व्यक्ति। रुडयार्ड किपलिंग भारत में रहे और उन्होंने भारत के बारे में लिखा कि भारत के जो लोग हैं वो बहुत शातिर हैं, चालाक हैं।
- वह भारत के संबंध में नेगेटिव पोर्ट्रेट करते हैं। यह काम रुडयार्ड किपलिंग जैसे कई ब्रिटिश राइटर्स ने किया था जो भारत को आधार बनाकर अपने उपन्यास और कहानियाँ लिखते थे। उनकी कहानियों और उपन्यासों में एक कॉमन बात थी कि भारत के लोग अंधविश्वासों से घिरे हुए हैं। यहाँ ऐसे राजा शासन कर रहे हैं जो मनमानियाँ कर रहे हैं। स्त्रियों की दशा बहुत सोचनीय एवं दयनीय हैं। और ऐसे में एक White Man आता है जो बहुत साहसी है और वह यहाँ पर आकर लोगों को आज़ाद करवा रहा है। एक प्रकार से यह दिखाने का प्रयास किया गया कि भारत या भारत जैसे अन्य औपनिवेशिक देश में केवल शोषण चल रहा था।
- एडवर्ड सैड एक लेफ्टिस्ट लेखक थे। उन्होंने अपने आप को सर्वश्रेष्ठ दिखाने का प्रयास किया। उनके अनुसार, यूरोप का

जो साहित्य एवं कला है, वह सर्वश्रेष्ठ है, सबसे ज्यादा सत्य है। बाकी अन्य देशों की बात करें तो यह सभी एशिया और अफ्रीका के देश बहुत निचले स्तर पर मौजूद हैं।

- इसके बाद दो वर्ल्ड वॉर होते हैं। यूरोप का मध्यकाल अंधकार युग के नाम पर जाना जाता है। वहीं यूरोपियन ने भी भारत का इतिहास लिखा। उन्होंने भारत के मध्यकाल को भी अंधकार युग कहा, लेकिन भारत का मध्यकाल अंधकार युग हो ही नहीं सकता। भारत के मध्यकाल में मुगल, लोदी, तुगलक इन शक्तियों का शासन था। शासन कैसा था वह अलग बात है, लेकिन हम उस पूरे युग को अंधकार युग नहीं कह सकते। इसका उदाहरण:- आज भी हम लोग वाणिज्य या अर्थशास्त्र में जिन शब्दावलियों या नीतियों का प्रयोग करते हैं, वहाँ से हम लोगों ने बहुत सी चीजें उधार ली हैं। इस तरह से हम उस ऐज को डार्क ऐज नहीं कह सकते हैं, जिस युग में हमने बहुत सी चीजें ली हैं। जो भारत का स्थापत्य है, वह मध्यकाल की देन है। यूरोप के इतिहासकारों ने अपनी तरह ही इस देश के भी इतिहास को समझाने का प्रयत्न किया कि यह एक तरीके से अंधकार युग है।

- इंग्लैंड के जो स्कॉलर थे, उन्होंने कुछ घोषणाएं की, “ जैसे कहा कि भारत में प्रशासन नहीं है और हम उस प्रशासन को यहां पर बहाल करने के लिए आए हैं। हम सिखाने आए हैं कि शासन कैसे किया जाता है। उन्होंने बहुत से शासकों एवं उनकी नीतियों की आलोचना की और कहा सिद्धांतों की कोई किताबें ग्रंथ या कोई चिंतन प्रणाली प्रशासन को लेकर पूरे देश में उपलब्ध नहीं है।
- “पश्चिम का जो श्रेष्ठता का दावा था कि पश्चिम पूर्व के मुकाबले बहुत बेहतर है इसका खंडन प्राच्यवाद में देखने को मिलता है।“
- एडवर्ड सईद ओरिएंटलिज्म (प्राच्यवाद) नाम से एक किताब थी उसको उन्होंने लिखा।
- एडवर्ड सईद की इस किताब के बाद, प्राच्यवाद की अवधारणा को लेकर काफी चर्चा हुई। इसने विद्वानों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि यूरोपीय विद्वानों ने अपने उपनिवेशों को किस तरह से चित्रित किया और वह कितना सही था।
- एडवर्ड सईद ने अपनी किताब “ओरिएंटलिज्म” में मुख्य रूप से अरब जगत की बात की है। इस किताब को आधार बनाकर,

दूसरे देशों के विद्वानों ने भी यह ढूढ़ने का प्रयास किया कि क्या हमारे देशों का भी चित्रण उस यूरोपियन ने इसी प्रकार किया है।

- कुछ यूरोपीय लेखकों ने, जो भारत में रहे थे, वापस अपने देश जाकर यहाँ के बारे में बड़ा-चढ़ाकर कहानियाँ सुनाईं। इससे यूरोप में भारत की एक काल्पनिक छवि बनी, जिसे बहुत से लोगों ने सच मान लिया, जबकि उन्होंने कभी भारत देखा भी नहीं था।
- पश्चिम के लोगों को भारत की संस्कृति और सभ्यता बहुत आकर्षक लगती है। जब यूरोपीय लोग भारत आते हैं, तो वे यहाँ के पहनावे और वेशभूषा को अपना लेते हैं। लेकिन, भारतीय लोग उन देशों में जाकर ऐसा नहीं करते हैं। पश्चिमी लोगों को भारत और अन्य एशियाई देश बहुत रहस्यमय लगते हैं।
- पश्चिमी लोग भारत को साधुओं और संन्यासियों का देश मानते हैं। वे सुनी-सुनाई बातों को सच मान लेते हैं और यहाँ आकर उन्हें खोजने की कोशिश करते हैं।

- एक लेख छपा था: यूरोप में समाजशास्त्र के कुछ विद्यार्थियों को यह पता लगाने के लिए कहा गया कि दैनिक जीवन में प्राच्यवाद कहाँ दिखता है। भारत के एक छात्र ने पारंपरिक पोशाक पहनी, और अफ़गानी छात्रों ने भी अपने देश के कपड़े पहने। जब वे सब एक साथ घूमने निकले, तो स्थानीय लोग उनकी तस्वीरें लेने लगे, क्योंकि उन्हें यह सब बहुत दिलचस्प लगा।

- जब आप गूगल पर “ईस्टर्न कंट्री” खोजते हैं, तो परिणाम अक्सर यूरोप केंद्रित होते हैं। उदाहरण के लिए, अफ्रीका खोजते ही पिरामिड और भारत खोजते ही ताजमहल या लाल किला जैसी छवियाँ दिखाई देती हैं।
- जब एआई को भारत, अमेरिका, ब्रिटेन और चीन जैसे देशों का कोलाज बनाने के लिए कहा गया, तो उसने भारत की कुछ पुरानी तस्वीरें दिखाईं, जिनमें एक मकबरा और ताजमहल शामिल थे। यह एक और उदाहरण है कि कैसे एआई को दिए गए डेटा में यूरोप केंद्रित दृष्टिकोण दिखता है।
- यूरोप अक्सर भारत को गरीबी, भुखमरी और पिछड़ेपन जैसी समस्याओं से जोड़कर देखता है। यह एक विकृत दृष्टिकोण है

जो भारत की समृद्ध संस्कृति और तेज़ आर्थिक विकास को अनदेखा करता है।

- यूरोपीयन लेंस से देखने का नज़रिया कुछ ऐसा ही है जो तार्किक नहीं है। उसी प्रकार से यूरोपियन के द्वारा जो हमारा इतिहास लिखा गया, हमारे संस्कृति और कलाओं की जो व्याख्या की गई वह दुबारा से देखने योग्य है।
- हम यूरोपियन लेखक के ऊपर आँख बंद करके भरोसा नहीं कर सकते हैं।

दो लेखक हुए :-

1. मिशेल फूको
2. एंटोनियो ग्राम्स्की

1. मिशेल फूको:

“Knowledge is Power” (ज्ञान ही शक्ति है।)

- जो भी व्यक्ति या संस्था ज्ञान अर्जित करेगा उसके पास अधिकार होगा।
- फूको की एक किताब है- “Madness and Civilization”. फूको ने इस किताब में बताया कि पहले जो पागल हुआ करते थे वे भी समाज के अंदर रहते थे और जब मेडिकल विज्ञान का उदय हुआ और जिसके फलस्वरूप पागलों को पागलखाने में रखा जाने लगा। जिसके पास Knowledge होगा उसी के पास Power होगा।
- तो जाहिर सी बात है जो इतिहास की किताबें लिखेगा साहित्य कला की व्याख्या करेगा उसका चिंतन करेगा अब वह जैसा बताएगा कि भारत पिछड़ा हुआ देश है या भारत एक असभ्य देश है बर्बर जातियों का देश है तो उसे मानना पड़ेगा।

- कई बार ब्रिटिशर ने किताबों में हमारे बारे में कहा कि भारत एक गया गुजरा देश है अंधकारमय व कोई भी न्यायिक व्यवस्था नहीं हुआ करती थी और हम लोगों ने भी उनकी बातों पर यकीन कर लिया क्योंकि उनके पास ज्ञान था तो उनके पास Power थी।

2. एंटोनियो ग्राम्स्की:

“यदि आपको किसी को गुलाम बनाना है तो उसे शारीरिक रूप से नहीं अपितु मानसिक रूप से बनाइए।”

जैसे: अंग्रेज अपनी एक लाख सैनिक के साथ भारत को कभी गुलाम नहीं बना सकते थे, इसलिए यह जरूरी था कि उनको मानसिक रूप से गुलाम बनाया जाए। फिर यह भी जरूरी था कि इस देश का एक ऐसा इतिहास लिखा जाए जिसमें अंग्रेजों के आगमन के पूर्व भारत को

एक पिछड़ा हुआ देश दिखाया जाए, और अंग्रेजों ने आकर इसका उत्थान किया इसलिए, यह एक षड्यंत्र था कि यह दिखाया जाए भारत का मध्यकाल अंधकार युग था यहां पर शासन वाणिज्य और अर्थशास्त्र के नाम पर कुछ नहीं था।

एंटीनियो ग्राम्स्की का जो “सांस्कृतिक आधिपत्यवाद” (Cultural Hegemony) सिद्धांत था इसमें जो शोषित हो रहा है वह अपने शोषण को सही ठहरने लगता है वह कहता है कि हमारे साथ जो हो रहा है वह सही हो रहा है।

The End



MADE BY: UTKARSH DWIVEDI